VOLUME-7, ISSUE-8, AUGUST-2018 • PRINT ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Education

एक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में नालंदा महाविहार का महत्त्व

डॉ. दिव्या भार्मा, आचार्या एम.ए., एम.एड. पीएच.डी. (षिक्षा) संस्कार इंटरनेषनल महिला टी.टी. कालेज, हनुमानगढ जं. (राजस्थान)

रजनीश कुमार स्वामी (व्याख्याता) एम.ए., एम.एड. , नेट (षिक्षा) संस्कार इंटरनेषनल महिला टी.टी. कालेज, हनुमानगढ जं. (राजस्थान)

ABSTRACT

नालंदा विष्वविद्यालय की स्थापना बिहार प्रांत की राजधानी पटना के दक्षिण में लगभग 40 मील की दूरी पर आधुनिक बड़गांव नामक ग्राम के समीप की गयी। हवेनसांग सातवीं शताब्दी में भारत भ्रमण हेतु आया और वह 635–40 ई॰ तक यहाँ का विद्यार्थी रहा, हवेनसांग के अनुसार नालंदा विहार की स्थापना शक्रादित्य ने कराई थी जिसका तादात्म्य कुमार गुप्त प्रथम (415–455 ई.) से किया जाता है। तिब्बती इतिहासकार तारानाथ ने 1608 ई॰ के लगभग बौद्ध धर्म का इतिहास लिखा जिसमें वर्णन आता है कि अशोक ने सारिपुत्र के निर्वाण स्थल की यात्रा की और वहाँ पर प्रथम बौद्ध मंदिर का निर्माण भी कराया। यह महाविहार अनेक ख्याति प्राप्त विद्वानों से शुशोभित था। इसमें आचार्य शीलभद्र, धर्मपाल, शान्तिरक्षित, पद्मसंभव, कमलशील, चन्द्रगोमिन, स्थिरमति बुद्धकीर्ति आदि उल्लेखनीय हैं। शीलभद्र अत्यंत प्रतिष्ठित विद्वान थे वे सभी विषयों में निष्णात थे।

KEYWORDS : सांस्कृतिक केन्द, नालंदा महाविहार का महत्त्व

एक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में नालंदा महाविहार का महत्त्व अद्वितीय रहा है। इसने भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। यहाँ पर बौद्ध शिक्षा के अलावा अन्य विषयों की भी शिक्षा दी जाती थी। नालंदा महाविहार में धर्म, दर्शन, तर्क, विज्ञान, औषधि तथा कला आदि की भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसके उच्च स्तर के शिक्षण ने अपने देश के अलावा अन्य देशों के विद्यार्थियों को भी अपनी ओर आकृष्ट किया था। जैसे – चीन, जापान, कोरिया तथा तिब्बत आदि। नालंदा महाविहार के अपने स्थापना काल में केवल एक बौद्ध विहार का निर्माण हुआ लेकिन धीरे–धीरे इसने एक महान विश्वविद्यालय के रूप में ख्याति पायी। यह संस्थान विश्व में धर्मिक सहिष्णुता का प्रमाण भी प्रस्तुत करता था। नालंदा महाविहार को अनेक राजाओं तथा राजवंशों के संरक्षण भी प्राप्त हुआ। इसमें गुप्त तथा मौखरी वंश के राजा मुख्य थे।

प्राचीन काल के उत्तरार्द्ध में नालंदा महाविहार अभूतपूर्व ख्याति प्राप्त कर चुका था। वर्तमान समय में इसकी पहचान बिहार प्रांत की राजधनी पटना के दक्षिण में लगभग 40 मील की दूरी पर आधुनिक बड़गांव नामक ग्राम के समीप की गयी है हवेनसांग सातवीं शताब्दी में भारत भ्रमण हेतु आया और वह 635–40 ई॰ तक यहाँ का विद्यार्थी रहा, हवेनसांग के अनुसार नालंदा विहार की स्थापना शक्रादित्य ने कराई थी जिसका तादात्म्य कुमार गुप्त प्रथम (415–455 ई॰) से किया जाता है।

धर्मिक क्षेत्र में गौतम बुद्ध और महावीर की कर्मस्थली ही बिहार रही है। यहाँ पर अनेक बौद्ध विहारों का निर्माण कराया गया। जिसको अनेक राजवंश का राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। ये बौद्ध विहार अपनी–अपनी उपयोगिता के कारण विश्व स्तर पर शैक्षिक एवं धर्मिक क्षेत्र में विख्यात हुए। हवेनसांग के विवरण से यह अभिज्ञात होता है कि यहाँ अनेक विहार निर्मित किये गये। अधिकांश विहार काल कवलित हो गये तथा कुछ विहार के ध्वंशावशेष अभी प्राप्त होते हैं। इनमें कुछ काफी बड़े और भव्य थे।

जे॰ एन॰ समाद्यार का मन्तव्य है कि नालंदा बुद्ध काल में पाटलिपुत्र से अधिक महत्वपूर्ण तथा उससे प्राचीन था। तिब्बती इतिहासकार तारानाथ ने 1608 ई॰ के लगभग बौद्ध धर्म का इतिहास लिखा जिसमें वर्णन आता है कि अशोक ने सारिपुत्र के निर्वाण स्थल की यात्रा की और वहाँ पर प्रथम बौद्ध मंदिर का निर्माण भी कराया। तारानाथ का यह भी मानना है कि दूसरी शताब्दी के आरंभ में दार्शनिक तथा रसायनज्ञ नागार्जुन यहां पर विद्यार्थी हुआ करते थे। आगे चलकर वे इसके प्रधन आचार्य बने। प्रसिद्ध इतिहासकार राधाकुमुद मुखर्जी का मानना है कि शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग ने भी नालंदा की यात्रा की तथा वहाँ अपनी एक 'सम्बंधिनी' से मिला था। नालंदा महाविहार के उत्खनन में जो प्राचीनतम पुरावशेष प्राप्त हुआ है वह समुद्रगुप्त का एक जाली ताम्रपत्र तथा कुमारगुप्त का सिक्का है। मुख्य स्तूप के निकट एक मनौती स्तूप (Votive Stupa) से एक अभिलेख मिला है। जो छठी शताब्दी ई॰ से सम्बन्धित है। बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारिपुत्र यहीं पैदा हुए थे। इसके अतिरिक्त धर्मपाल के काल में ज्ञानपाद के एक शिष्य प्रशान्तृ मित्र ने प्रज्ञापारमिता क्रिया और योगतंत्रा का भी कुछ अध्ययन किया। जिससे उसे यमान्तक सिद्धि की प्राप्त हुई।

उसने नालंदा के दक्षिण में 'अमृताकार' नामक विहार बनवाया था। धर्मपाल द्वारा स्थापित विक्रमशिला महाविहार की तरह नालंदा को भी हीनयानियों का सामना करना पड़ा था। इससे विदित होता है कि इस काल तक हीनयान किसी न किसी रूप में जीवित था।

पाल शासक देवपाल के घोसरावाँ अभिलेख में यह उल्लेख है कि देवपाल ने वीर देव नामक एक ब्राह्मण को नालंदा की देखभाल के लिए नियुक्त किया था। जो आगे चलकर नालंदा भिक्षु संघ का प्रधन नियुक्त हुआ। पाल शासकों के काल में गुर्जर–प्रतिहारों ने मगध को आक्रांत किया था। इससे स्पष्ट होता है कि गुर्जर प्रतिहार भी नालंदा के महत्व से अनभिज्ञ नहीं थे। यहाँ से एक मनौती स्तूप प्राप्त हुआ है जिसमें उत्कीर्ण अभिलेख में महेन्द्रपाल देव का उल्लेख है जो गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था। यह 10वी. शताब्दी में मगध पर आक्रमण किया था।

नालंदा विश्वविद्यालय में छः विहार थे तथा एक मुख्य द्वार के अलावा आठ बड़े–बड़े हाल तथा 30 कक्ष थे। यहाँ के महान पुस्कालय को 'धर्मराज' कहा जाता था। इसमें बहुत सी दुलर्भ पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित थी। यहाँ बौद्ध धर्म के महायान शाखा के साथ–2 हेतुविद्या, शब्दविद्या, चिकित्सा–शास्त्र, भाषा–विज्ञान, दर्शन, न्याय, संस्कृत व्याकरण, नक्षत्र विद्या आदि विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी। नालंदा महाविहार की शिक्षा व्यवस्था महास्थविर के नियन्त्रण में होती थी।

यह महाविहार अनेक ख्याति प्राप्त विद्वानों से शुशोभित था। इसमें आचार्य शीलभद्र, धर्मपाल, शान्तिरक्षित, पद्मसंभव, कमलशील, चन्द्रगोमिन, स्थिरमति बुद्ध कीर्ति आदि उल्लेखनीय हैं। शीलभद्र अत्यंत प्रतिष्ठित विद्वान थे वे सभी विषयों में निष्णात थे। यहाँ शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती थी, विद्यार्थियों को भोजन, वस्त्र, चिकित्सा तथा छात्रावास की सुविधाएँ भी प्राप्त थी। नालंदा महाविहार की शिक्षण विधि मौखिक थी और छात्रों को भाषण के माध्यम से पढ़ाया जाता था भारत के अलावा यहाँ विशेष रूप से चीन, जापान कोरिया तथा तिब्बत से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने हेतु आते थे।

नालंदा का महत्व दक्षिण पूर्वी एशिया के लिए भी था देवपाल के समय एक अभिलेख में हमें देखने को मिलता है कि यवभूमि एवं सुवर्ण द्वीप अर्थात् आधुनिक जावा और सुमाध के राजा बलपुत्र देव ने नालंदा के देखभाल के लिए और वहाँ के भिक्षुओं के रहन–सहन के लिए देवपाल से सहायता माँगी जिससे देवपाल ने पाँच–गाँव दान में दिया। 4 गाँव राजगृह में थे और एक गया में था। इस अभिलेख में 'बलपुत्रा देव' की वंशावली दी गयी है। उस वंशावली से हमें इस बात का ज्ञान होता है कि बलपुत्रा 'शैलेन्द्र वंश' का था और एक कट्टर बौ(अनुयायी था। शैलेन्द्र वंश का समय इस अभिलेख में लगभग 8 वीं सदी बताया गया है। शैलेन्द्र वंश के समय जावा में महायान बौद्ध धर्म प्रचलित था क्योंकि इसी समय 'तारा' महायान की प्रचलित देवी का एक बहुत बड़ा मंदिर और साथ में एक विहार भी स्थापित हुआ था। इसी समय एक और महायान देवी मंजूश्री जावा और सुमाध के विभिन्न स्थानों में देखने को मिलता है। इस अभिलेख से हमें यह पता चलता है कि बलपुत्रादेव के दान का यह उद्देश्य था कि नालंदा में जावा, सुमाध के भिक्षुओं का महत्व बना रहे। नालंदा क्षेत्रा से शंकर्षण और तारा की एक मूर्ति प्राप्त होती है जिसपर नालंदा उत्कीर्ण है। नालंदा का ये विहार जैन ग्रन्थों में भी देखने को मिलता है। किन्तु इन सभी ग्रंथों में नालंदा को एक विश्वविद्यालय नहीं बताया गया है। इन सब ग्रन्थों में नालंदा को एक सम्पन्न शहर बताया गया है। इस तरह नालंदा एक शहर के रूप में विकसित हो गया था।

उपरोक्त विस्तृत विवेचन के आधर पर कहा जा सकता है कि नालंदा महाविहार शिक्षा, संस्कृति एवं धर्मिक गवेषणा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। इसने विदेशों में विशेष रूप में दक्षिण पूर्व एशिया चीन तथा कोरिया आदि के साथ संस्कृति के शैक्षिक एवं धर्मिक सम्बन्ध कायम किया।

नालंदा महाविहार का योगदान इन विषयों के अलावा चिकित्सा विज्ञान, कला तथा स्थापत्य में अविस्मरणीय रहेगा। इस प्रकार नालंदा महाविहार बौद्ध ध्र्म के प्रचार–प्रसार का प्राचीन काल में एक प्रमुख केन्द्र का गौरव हासिल किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाटर्स य 2, पृ॰ 164
2. समाद्यार, जे. एन. य दी ग्लोरीज ऑफ मगध पृ॰ 126
3. लामा, तारानाथ य भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास (अनु॰) रिगजिन लुण्डुप लामा, (के. पी. जायसवाल, शोध संस्थान, पटना) 1971, पृ॰ 69
4. वही
5. लामा तारानाथ य भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास, पृ॰ 48–49
6. फाह्यान य ए. रिकार्ड ऑफ बुद्धिस्ट (अनु. लेग्गे) पृ॰ 51
7. संकालिया, एच. डी. : टी यूनिवर्सिटी ऑफ नालंदा, पृ॰ 51
8. वही, पृ॰ 68
9. एपी॰ इ॰य अंक–18 पृ॰ 310–17
10. संकालिया, एच॰डी॰, दि यूनिवर्सिटी ऑपफ नालंदा, पृ॰ 68
11. बरूआ, डी. के. य विहारराज इन एन्शियेन्ट इण्डिया, पृ॰ 139–141
12. दास, एस. के. य एजूकेशन सिस्टम ऑपफ एन्शियेण्ट हिन्दूज, पृ॰ 361
13. माथुर, विजयेन्द य ऐतिहासिक स्थानावली, पृ॰ 495
14. मुखर्जी, आर. के. य एन्शियेन्ट इण्डियन एजूकेशन, पृ॰ 566
15. माथुर, विजयेन्द्र य ऐतिहासिक स्थानावली, पृ॰ 495
16. मुखर्जी, आर. के. य ऐन्शियेन्ट एजूकेशन, पृ॰ 566
17. एपी॰ इ॰ य ख॰ 17, अभि॰ सं॰ 17, पृ॰ 310–318